12.15 hrs.

MESSAGES FROM RAJYA SABHA

SECRETARY: Sir, I have to report the following messages received from the Secretary-General of Rajya Sabha:—

(i) "In accordance with the provisions of rule 127 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha, at its sitting held on the 27th July, 1982, agreed without any amendment to the Eyes (Authority for use for Therapeutic Purposes) Bill, 1982, which was passed by the Lok Sabha at its sitting held on the 14th July, 1982."

(ii) "In accordance with the provisions of rule 127 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I am directed to inform the Lok Sabha, that the Rajya Sabha, at its sitting held on the 27th July, 1982, agreed without any amendment to the Ear Drums and Ear Bones (Authority for Use for Therapeutic Purposes) Bill, 1982, which was passed by the Lok Sabha at its sitting held on the 15th July, 1982."

(iii) "In accordance with the provisions of rule 111 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I am directed to enclose a copy of the Rubber (Amendment) Bill, 1982, which has been passed by the Rajya Sabha at its sitting held on the 26th July, 1982."

(iv) "I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha, at its sitting held on the 27th July 1982, has passed the enclosed motion referring the Mental Health Bill, 1981, to a Joint Committee of the Houses and to request that the concurrence of the Lok Sabha in the said motion and the names of the Members of the Lok Sabha to be appointed to the said Joint Committee may be communicated to this House.

MOTION

"That the Bill to consolidate and amend the law relating to the treatment and care of mentally ill persons, to make better provision with respect to their property and affairs and for matters connected therewith or incidental thereto be referred to a Joint Committee of the Houses consisting of 30 members; 10 members from this House namely:—

1. SHRI SUKHDEV PRASAD
2. SHRI BHUVNESH CHATURVEDI
3. SHRI KISHOR MEHTA
4. SHRI NATHA SINGH
5. SHRIMATI AMARJIT KAUR
6. SHRI U. R. KRISHNAN
7. SHRIMATI ILA BHATTACHARYA
8. DR. M. M. S. SIDDHU
9. SHRI KALRAJ MISHRA
10. SHRI ABDUL REHMAN SHEIKH

and 20 members from the Lok Sabha;

that in order to Consitute a meeting of the Joint Committee the quorum shall be one-third of the total number of members of the Joint Committe;

That in other respects, the Rules of Procedure of this House relating to Select Committees shall apply with such variations and modifications as the Chairman may make;

that the Committee shall make a report to this House by the last day of the first week of the 124th Session of the Rajya Sabha; and

That this House recommends to the Lok Sabha that the Lok Sabha do join in the said Joint Committee and communicate to this House the names of the members to be appointed by the Lok Sabha to the Joint Committee."

12.16 hrs.

RUBBER (AMENDMENT) BILL
As Passed by Rajya Sabha

Secretary: Sir, I lay on the Table of the House the Rubber (Amendment) Bill, 1982, as passed by the Rajya Sabha

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE
Extremist activities in Punjab

श्री मनी राम बागड़ी (हिसार) : मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर गृह मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह इस बारे में एक वक्तव्य दें :

"पंजाब में उग्रवादियों की कथित गतिविधियों, जिनके कारण देश की एकता और अखंडता को खतरा पैदा हो रहा है जैसा कि मुख्य मंत्री के पारिवारिक घर पर एक बम फेंके जाने की हाल की घटना से स्पष्ट है।"

THE MINISTER OF DEFENCE AND HOME AFFAIRS (SHRI R. VENKATARAMAN): Sir, according to the information received from the Government of Punjab, on the night of the July 23, 1982 at about 11.45 PM two country-made cracker-type bomb were thrown in the anscestral house of the Punjab Chief Minister at village Jandiala, District Jullundur. One of the bombs exploded damaging the wooden frame and glass panes of the ventilator in the house. Fortunately, there was no loss of life. Shri Bal Gobind, the servant, who was sleeping nearby and some others reached the spot on hearing the explosion. The other unexploded bomb was got diffused. A case under FIR No. 340 dated 24-7-82 u/s 4/6 of the Explosievs Act has been registered and is under investigation. The report of the Chemical Examiner and Scientific Expert on the explosives used in these devices is awaited. The State Government have issued a general alert in all the Districts of the State and are maintaining utmost vigilance.

It is unfortunate that a small group of people with sectarian outlook should adopt illegal and violent methods to support their demands which are of a parochial nature. Ours is a democratic country in which grievances can always be settled through discussions. I may also add that Article 25 of the Constitution provides for freedom to profess, practice and propagate religion subject to public order morality and health and violence can hardily be a way to get the demands fulfilled. The Government has always been keen and earnest in finding out amicable solution of various problem. But, if methods which smack of territorism and violence are adopted by some misguided people, the Government must take all necessary measures to curb such illegal activities.

Sir, I may recall that the House had unanimously adopted a desolution on the 29th April, 1982, reaffirming its commitment to the national policy of secularism, tolerance and amity, among all sections of the Indian population and expressing confidence that the people of Punjab will not be swayed by any mischievous and irresponsible actions of a few misguided and anti-national persons. I am confident that every Hon'ble Member of this House will join me in reiterating the spirit of that Resolution and condemning the various acts of violence, sacrilege etc. The Government will spare no effort in restoring peace and harmoney in the State and I seek the cooperation of the Hon'ble Members in this regard.

श्री मनी राम बागड़ी (हिसार) : उपाध्यक्ष महोदय, यह जो सवाल काल अटेंशन द्वारा आया है यह बहुत महत्वपूर्ण है। और मैं सब से पहले बधाई देता हूं कि आखिर इस देश में कुछ सरकार से अलग भी लोग हैं, जो ऐसी समस्याओं पर विचार करते हैं, जैसे श्री एस० एम० जोशी, डा० सुशीला नायर, और गांधी जी के पोते जो एक कमेटी बना कर पंजाब गये अमन शांति स्थापित करने वास्ते और वहां के हालात को देखने। इन सवालों का जवाब मैं चाहता था कि गृह मंत्री जी जरा खुद ला कर देते ताकि यह बात राष्ट्र में फैलती और

पंजाब में भी फैलती, और जो गलतफहमियां पंजाब में और राष्ट्र के दूसरे भागों में हैं वह मिटतीं कारण क्या है, झगड़ा क्या है ? आदमी आदमी का झगड़ा, सिर्फ दिमाग का झगड़ा है । जब दिमाग की टूटन हो जाती है तो फिर देश,गांव घर टूटते हैं, पति-पत्नी और सास वह के संबंध टूटते हैं और यह सारी चीजें हो जाती हैं । अगर पंजाब के लोगों को, शासन और जनता के लोगों की पार्टियों, चाहे वह धार्मिक हैं या सामाजिक, यह सिखा पाती कि हिन्दुस्तान के अन्दर एक दशमेश पिता, जिसको पन्थ कहते हैं, जिनका जन्म पटना में हुआ, कर्म आनन्द पुर में उन्होंने शरीर त्यागा नान्देमड़ में, वह कहां से चले, पटना, पंजाब, हाराष्ट्र, इस तरह से एक राष्ट्र बना है ।

शिवाजी महाराष्ट्र से चले और दिल्ली आए। इसी तरीके से राष्ट्र राष्ट्र का दिमाग है। इसका तोड़ना कहां से होता है? अभी श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जो सवाल उठाया उसमें इसी दिमाग की टूटन और झूटन है। राष्ट्र के त्यौहार हैं या नहीं जब से भारत राष्ट्र बना है, तो इसके राष्ट्रीय त्यौहार थे रामनवमी, दीवाली, होली । जब ये राष्ट्रीय त्यौहार नहीं मनेंगे तब साम्प्रायिकता और वाद-विवाद चलेंगे। यह राष्ट्रीयता की जड़ को तोड़ने वाली बात है। कोई कहेगा कि साईं बाबा का जन्म दिन मनाओ कोई कुछ कहेगा और कोई कहेगा कि धीरेन्द्र ब्रह्मचारी का जन्म दिन मनाओ। क्यों कि राष्ट्रीयता टूट रही है, उस पर चोट लग रही है।

मैं बधाई देता हूं अकाली दल को कि उनके शासन काल में इतने साम्प्रदायिक दंगे नही हुए, साम्प्रदायिक तनाव नहीं हुआ जिसको सभी लोग साम्प्रदायिक पार्टी कह कर पुकारते हैं, उसके शासन में कोई साम्प्रदायिक दंगे नहीं हुए। हां, दरबार साहब में भी अगर कोई आकाशवाणी का छोटा-मोटा पीपा रखने की बात आई तो वह भी उन लोगों की तरफ से जो उस समय विरोध में लगे थे, जो अपने आपको सैकुलर कहते थे ।

मैं एक मद्दे की बात आपके सामने रखना चाहता हूं। भारत पाक का बंट-वारा या लड़ाई हिंदू-मुसलमान की लड़ाई नहीं है, यह लड़ाई यहां पर खत्म नहीं हुई है । यह हिन्दू-सिख की लड़ाई नहीं है यह लड़ाई स्वदेशी दिमाग और विदेशी दिमाग की लड़ाई है।

स्वदेशी दिमाग एक था, कि समूचा राष्ट्र एक राष्ट्र है, एक भारत है, एक हिन्दुस्तान है। चाहे लंका भी उस में आ गया चाहे बर्मा भी आ गया। उसको कहां से तोड़ा गया? तोड़ा गया था बंगाल को और वहीं से विदेशी दिमाग आ गया था । स्वदेशी दिमाग था अकबर का जो हिन्दुस्तान को बना रहा था और विदेशी दिमाग था गौरी और गजनी का। इस तरह से भारत के दो टुकड़े-- भारत और पाकिस्तान किए गए। स्वदेशी दिमाग में गुरू गोविन्द सिंह जी महाराज थे जिन्होंने पटना, पंजाब और महाराष्ट्र को जोड़ा और यह विदेशी दिमाग है चाहे कनाडा में बैठकर काम करता है चाहे लन्दन, दिल्ली या अमृतसर में बैठकर करता है। जो भारत के टुकड़े करता है, वह विदेशी दिमाग है, स्वदेशी नहीं है। उनकी मदद कौन करते हैं कैसे कर हैं? जरा इस बात पर सोच लीजिए।

किसी की शिकायत आप सुनेंगे नहीं । सिख समुदाय की बात आप शांतिमय ढंग

[श्री मनीराम बागड़ी]

से सुनेंगे नहीं। गांधी जी का आन्दोलन था—शराबबन्दी। वह राष्ट्रीय आन्दोलन था। अगर कोई कहे कि शराब यहां नहीं बिकनी चाहिए, तो आप उसको गलत कैसे करायेंगे? अगर शराब, सिगरेट के खिलाफ कोई शुद्धि करे, यह राष्ट्रीय हित की बात है या अनहित की बात है? उस के लिए अगर अमृतसर में आन्दोलन चले तो क्या बात है? ऐसा आन्दोलन समूचे भारत में चलना चाहिए कि शराब बन्द हो, सिगरेट बन्द हो, ऐब बन्द हो तो उस पर आपत्ति की कौन सी बात है?

अमृतसर एक पवित्र नगरी है। गांधी जी की आस्था के मुताबिक धार्मिक आस्था के मुताबिक और जनहित की दृष्टि से भी सरकार को उसे एक पवित्र नगरी स्वीकार करने में कौन सी आपत्ति थी? लेकिन एक सही रास्ते को छोड़कर एक दुष्ट और राक्षसी रास्ता अपनाया गया।

जो दरबार साहब या किसी गुरुद्वारे में सिगरेट फूंकता है, जो ग्रन्थ साहब के वरक फाड़ता है, जो गाय का सिर काट कर टांगता है, वह न हिन्दू है, न मुसलमान है और न सिख, है वह एक फितना है, राक्षस है, एक विदेशी दिमाग है। जो व्यक्ति दाढ़ी और केश रख कर गाय का सिर काट कर मंदिर को बेहुरमती करता है, या तिलक छाप लगा कर हिन्दू का रूप धारण कर के गुरुद्वारे में बीड़ी या सिगरेट फूंकता है, वह शैतान है और हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के लिए खतरा है।

मैं स्पष्ट बात कहना चाहता हूं कि जिसकी हुकूमत में ऐसी घटनाएं होती हैं उसी का दोष होता है। अगर हुक्मरान कहे कि यह तो फलां का कसूर है, मैं क्या करूं तो मैं बताना चाहता हूं कि आज से दो हजार साल पहले चाणक्य ने कहा था कि ऐसे कमजोर और निकम्मे राजा को राज्य करने का अधिकार नहीं है, जो दूसरे पर दोष लगाता रहे और पाप को मिटा न सके। जहां इस में शासन का दोष है, वहां विरोधी दलों की भी कमजोरी है कि वे ऐसी निकम्मी सरकार को बर्दास्त करते हैं और उसको उखाड़ कर नहीं फेंकते। दोनों बराबर के दोषी हैं। सिर्फ आलोचना करना ही काफी नहीं है, कर्म करने की भी जरूरत है। यह संडे है। मुझे इस से कोई मतलब नहीं है। मैं अंग्रेजी के शब्द कम जानता हूं और पढ़ता भी कम हूं। अगर आप कहें तो मैं पढ़ कर सुना दूं। फरीदकोट के एस० एस० पी० ने वहां पर सी० आई० डी० को रिपोर्ट लिखी है कि केन्द्र में ऐसे होम मिनिस्टर के रहते हुए अमन-चैन की व्यवस्था नहीं चल सकती। मैं यह नहीं कहता कि यह रिपोर्ट सच है। समझ में नहीं आता कि मैं मंत्री महोदय को घर मंत्री मानूं या बेघर मंत्री मानूं या दो घर मंत्री मानूं। पांच पतियों की पत्नी तो पांडवों के जमाने में थी। दो पतियों वाली बात समझ में नहीं आती—यह दो घर कैसे सम्भालेंगे।

जब हमने सब से पहले खालिस्तान के बारे में सवाल उठाया तो घर मंत्री साहब ने कहा कि यह अकालियों की लड़ाई थी, ये भिंडरावाले और सरदार संतोख सिंह हमारे नजदीक थे, हमने उनकी मदद कर दी, वे दोनों लड़ें तो हम से क्या मतलब है। सरकार धर्म के मामलों में दखल दे और कुछ लोगों की मदद करे, तो फिर झंझट तो पैदा होंगे। इस दोष को निकालना पड़ेगा।

सब से पहले हमने खालिस्तान के सवाल को उठाया। उसके बाद जब अमृतसर में घटना घटी, तो मुझे सदन में बैठकर धरना देना पड़ा और भारत के इस पवित्र मंदिर में, जहां कानून बनते हैं, हम लोगों ने प्रतिज्ञा की थी। कि पंजाब में अमन-चैन और व्यवस्था कायम करेंगे। लेकिन वहां अमन-चैन और व्यवस्था कायम नहीं हुई है। श्री दरबारा सिंह बयान देते हैं कि ला एंड आर्डर की स्थिति बिल्कुल ठीक है। अभी उस बयान पर स्याही खुश्क भी नहीं हुई कि उनके मकान पर बम गिराए गए।

खर, मुझे कोई ज्यादा बोलना नहीं है। बोलेंगे तो ये हरिकेश बहादुर, चन्द्रपाल शैलानी और ये हमारे बैठे हैं राम विलास पासवान जिन को कुछ करना है। लेकिन मैं यह कह रहा हूं कि जो एक वायु मंडल वहां बना लाला जगत नारायण की कत्ल के बाद और फिर अमृतसर के कांड के बाद, उस के बाद आग बढ़ती गई। पटियाला में बढ़ी, दूसरे शहरों में बढ़ी। इसलिए कुछ न कुछ कमियां हैं, इस को हमें सोचना पड़ेगा। कमी क्या है? इतनी बड़ी एक जगह में उठ कर के जब सब लोगों से अपील की और प्रण किया और फिर वहां भी यह नहीं हो रहा है तो उस में आप सोच लीजिएगा कि क्या कारण है।

मैं सब लोगों से यह कहूंगा कि हिन्दू धर्म बचाओ, सिख धर्म बचाओ, यह जो सम्मेलन कर रहे हैं पंजाब में, यह आग से खेल रहे हैं। चाहे कोई भी हो, न हिन्दू को खतरा है न सिख को खतरा है। खतरा वहां पर हो सकता है आपसी फूट से। घर मंत्री और मुख्य मंत्री की फूट से किसी गद्दी को खतरा हो सकता है और खतरे के बीच में मासूम लोगों की जिन्दगी जा सकती है वह चाहे हिन्दू हों, चाहे सिख हों, चाहे मुसलमान हों, चाहे ईसाई हों, उस से कोई मतलब नहीं। इंसानियत वहां की खत्म हो चुकी है। कुछ बातें ऐसी गलत भी हैं, जैसे पंजाब के लोगों को फौज की भर्ती के अन्दर जो पहले हिस्सा था वह पंजाब और हरियाणा को अब नहीं मिल रहा है या है जैसे सरदार साहब की जगह श्री लिखने की बात है, ऐसा क्यों, और मैं तो स्पष्ट कहूंगा कि घर मंत्री जी सोच लें, यह दरबारा सिंह जी के वश की बात नहीं। यह कायदा ही ऐसा बनता चला गया है। उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री ने त्यागपत्र दिया लेकिन अपने भाई भतीजों के निधन को भी वह नहीं बचा सके और आखिर में एक दिन आया जब उन्हें छोड़ना पड़ा। सरदार दरबारा सिंह जी के सिर्फ छोड़ने से कोई भला हो जायेगा ऐसी बात नहीं है। लेकिन सरदार दरबारा सिंह को जाना पड़ेगा। ऐसा एक कमजोर मुख्य मंत्री जो समझा नहीं सकता, और कंट्रोल नहीं कर सकता वह पंजाब को चला नहीं सकता। यह बात दूसरी है कि कितनी जिन्दगी और आहुति मांग रहा है पंजाब 'अमन चैन और शान्ति, के लिए।

अभी एक सवाल उठा है, यू. के. के अन्दर जब यह पता है कि यहां सवाल उठा है तो भारत को राष्ट्र-पताका को जलाया जाये और उस का अपमान किया जाये, यह क्या है? और मैं तो यह कहूंगा कि यह हमारी शिक्षा में भी कमी है, हमारी शिक्षा-प्रणाली में भी कमी है। अगर मेरा वश चलता तो हर धार्मिक किताब के अन्दर यह बात लिखवाता कि जहां धर्म उत्तम है वहां धर्म की उत्पत्ति चाहे कहीं हुई हो, धर्म जिन्दा रह सकता है तो राष्ट्र में रह सकता है। राष्ट्र नहीं है तो धर्म नहीं चल सकता। राष्ट्र खत्म है तो सारे धर्म खत्म हो जाते हैं। एक धर्म कहां रह जाता है? धर्म है, धर्म उत्तम है। लेकिन राष्ट्र की रक्षा का धर्म सब से उत्तम धर्म है। तभी तो उन के धर्म चलेंगे नहीं तो नहीं चल सकते। यह सब कुछ कहने

[श्री मनीराम बागड़ी]

के बाद ... (व्यवधान) ... देखिए, मुझे हंसने वाले लोगों पर बड़ा गुस्सा आ रहा है। मुझे आप पर भी गुस्सा आ रहा है जो आप हंस रहे हैं ? आप संजीदगी की बात पर हंस रहे हैं, यह कोई स्कूल में बैठ कर बच्चों के साथ बात नहीं चल रही है। लोगों की जिन्दगी की बात है। यहां जो हंस रहे रहे हैं या तो वे दिमाग के लोग नहीं हैं या आग के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। यह हंसी की बात नहीं है।

यह पंजाब भारत का द्वार है। अन्न वहां से पैदा होता है। फौज वहां की है, पुलिस वहां की है। सीमा आप की लगी हुई है। आज जो चन्द शहरों में चन्द शरारत पसन्द लोगों की वजह से यह आग लगी हुई है, हिन्दू और सिख के नाम पर चन्द राजनैतिक लोग जो यह शरारत कर रहे हैं अगर यह गांवों में लग गई और गांवों से निकल कर फौज और पुलिस की तरफ चली गई तो हिन्दुस्तान तबाह हो जायेगा इस को बचाना चाहिए बहुत संजीदगी के साथ यह बात लेनी चाहिए।

मैं गृह मंत्री से यह पूछना चाहूंगा, जैसे गुरुद्वारे के चुनाव में एक ऐक्ट बना कर और टांग अड़ा कर विरोध पैदा करने की चेष्टा की गई थी, उस की कुर्बानी में उन को अपने ही आदमी सरदार संतोष सिंह को बलिवेदी पर चढ़ा कर देनी पड़ी इसी तरह से जो बार-बार यह ला एंड आर्डर का सवाल हो रहा है इसके बारे में क्या ऐसी दखलअन्दाजी सरकारी तौर पर बन्द करेंगे ?

दूसरी बात यह है कि जिन गैरकानूनी संगठनों पर आप लोगों ने प्रतिबन्ध लगाया है उनके लोगों को देश विदेश में गिरफ्तार करने के लिए कितनी मजबूती के साथ कह सकते हैं कि इतने दिन में उनको साफ कर देंगे ? अरे, दूसरे मुल्क के साथ लड़ाई में भी इरादा बनाकर चलते हैं और कहते हैं कि कर लेंगे। एक तरफ आप कहते हैं कि गिनती के 15 आदमी हैं लेकिन जितने ये 15 आदमी हैं उनसे अधिक मर्डर देश में हो गए, उस प्रान्त में हो गए।

तीसरी बात यह है कि सिखों की जो उचित मांगें हैं, धार्मिक, उन मांगों की पुर्ति के लिए, आप राजनीतिक उद्देश्य को सामने न रखते हुए, अपना राजनीतिक लाभ न उठाते हुए आप कदम उठायेंगे और इस किस्म का एक कमीशन मुकर्रर करेंगे कि जब से यह सवाल दल खालसा और खालिस्तान का चला है तब से लेकर आज तक जितने कत्ल हुए हैं और जितने बड़े आदमियों के नामों का उसमें हाथ आया है उसके लिए सुप्रीम कोर्ट या हाई कोर्ट के जज की अध्यक्षता में कमीशन बना कर जो भी कुसूरवार हों, चाहे ऊपर के राजनीतिक कुसूरवार हों, जैसे कि वहां के मुख्य मंत्री ने कहा कि मेरे लिए प्राब्लम होम मिनिस्टर है और होम मिनिस्टर भी कुछ कह गए थे, यह कोई मामूली बातें नहीं थी, उनकी जांच आप करायेंगे और साथ ही वहां सरकारी कर्मचारी और पुलिस कप्तान तक जो आतंकवादियों के दल में शामिल हैं उन के खिलाफ भी जांच करके ऐक्शन लिया है और क्या आगे ऐसे लोगों के खिलाफ ऐक्शन लेंगे ?

मैं आप से यह भी कहूंगा कि गांधी पीस फाउन्डेशन कमेटी की तरफ से जो तीन आदमियों का दल बनकर गया है, क्या ऐसे लोगों को भी आप महत्व देंगे ताकि उनकी राय से भी कोई अच्छी बात हो सके ?

मैं फिर सारे सदन को बधायी देता हूं, मैं तो उस में शामिल नहीं था, मैं तो सदन में कह कर चला गया था

कि जब तक पंजाब में शान्ति नहीं होगी, तब तक मैं यहां नहीं आऊंगा, लेकिन फिर भी आपने गांधी जी की परम्परा को कायम रखते हुए इस सदन में प्रस्ताव पास किया कि पंजाब में अमन और शांति होगी। यह दुर्भाग्य है कि हमारे में कहीं न कहीं कमी है, हमारे दिमागों के पुरजों में, कहीं कोई हिन्दू को बचाने के लिए चला गया, कोई सिख को बचाने के लिए लेकिन इन्सानियत को बचाने के लिए कोई नहीं गया। शासन की जो त्रुटियां थीं वह वाकयात होने के बाद भी ठीक नहीं हुई हैं। मैं चाहूंगा मंत्री महोदय इन सभी बातों का पूर्ण जवाब दें।

SHRI R. VENKATARAMAN: Mr. Deputy-Speaker, Sir....

DR. SUBRAMANIAM SWAMY (Bombay North East): Will you say something about All India Gurudwara Act, which you have promised?

MR. DEPUTY-SPEAKER: He is replying to Mr. Bagri. You cannot ask any question.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY: Under Rule 355 I can ask him.

SHRI R. VENKATARAMAN: I am not deflected by interruptions.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I know that.

SHRI R. VENKATARAMAN: Sir, with many things which the hon. Member Mr. Bagri said the whole House will be in agreement. In fact this House has adopted, as I pointed out, a unanimous resolution asking for cooperation for restoring peace and harmony in Punjab. We are all aware that the present activity is one which is carried on by a small minority. The bulk of the people of Punjab are not in favour of any disturbance, any violence. On the contrary, they are all deeply interested in having a very stable society in which they can make progress.

Sir, we all know the great contribution that Punjab has made both to the freedom of India and to the Defence of India on occasions when we had to defend our borders. We are also aware of the great contribution that Punjab has made in the field of agriculture and small-scale industries. These things could not have been done if the bulk of the people are interested only in promoting disharmony amongst themselves. This can be done only if the society is keen on economic development, social progress and so on. The fact that we still have a considerable rate of progress in Punjab clearly shows that the activities of the small group are certainly not to the taste and liking of the people of Punjab themselves—the bulk of the majority of the people of Punjab themselves. Unfortunately, in this matter since religion is being mixed, it is very difficult for Government to take very severe action. I said elsewhere, Government are very keen to see that they do not do anything which will escalate the communal passions and tensions. Even if certain strong action is called for, Government do not propose to do it if that would in effect create further communal passions and tension or create tensions and thereby cause greater disturbance than what is now happening in the State Government. are trying to isolate those people who are engaged in these kinds of activities and also try to arrest them in places where it will not lead to further communal passion or tension. I can make it clearer by saying—we cannot go and arrest them in Gurdwaras.

We cannot go and arrest them in....

DR. KARAN SINGH (Udhampur): Are you giving an assurance that you will not arrest anybody? Please be careful. You are making a statement on the floor of the House.

SHRI R. VENKATARAMAN: Please read my statement. I am very careful in my words. I said we are weighing, all the time, balancing, between taking very severe action and the consequences. If as a consequence of doing something we will create conflagration, certainly it is prudence, it is the duty of the Government to see that they do not create more trouble than what already exists by a kind of activity or by a kind of action which would in other circumstances may perhaps be taken. In this case the hon. Member has pointed out the demands. So far as their normal, legitimate grievances are concerned, these can always be discussed and then it can be settled. There has been no question about it. The difficulty arises when they are making unreasonable demands such as khalistan, separation and so on. How can we discuss it? It is impossible for any patriotic Indian to say that he will sit and negotiate this particular question of Khalistan and separation. That has got to be dealt with. That has got to be suppressed. There is no other way out of it. Barring that, I assure the House that every effort will be made to see that all the other grievances, the religious demands, which are being made can be discussed and settled. There is absolutely no reason why we cannot sit down and settle the other things.

There are a number of incidents which have happened. I am almost sure that they are the acts of agent provocators such as defiling the sacred places. There are instances of defiling the gurudwaras. There have been instances of defiling the Hindu temples. It has been taken by *agent provocaters* or the parties interested in seeing that this kind of thing goes on so that no settlement is reached. It is up to us to see that we do not encourage either of the people. Here, Government have taken a very firm line and they have said that they will not give any quarter to persons who indulge in rousing the passions of the people by acts which are likely to injure the religious sentiments. The hon. Member has said that the administration has got to be blamed. I thought, he would go more specific and say, 'why' and 'how'. But he did not do it. The administration has a very difficult task, all of us agree. It is possible, perhaps, for some people to take a different view. But I did not find anything to substantiate the statement that the administration has failed or the administration is to be blamed.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (New Delhi): We referred to the involvement of certain officials.

SHRI R. VENKATARAMAN: You know, Mr. Vajpayee, I will never miss even a single point. The second thing stated is, some papers have criticised the then Home Minister. I would say, we should not attach too much importance to the printed matter. Just because somebody prints something, it does not become sacred. After all, it has only one version which is printed in the paper. It is no more sanctity than a word of mouth or something said by some persons. And you cannot hear everybody supporting you for everything. It is possible somebody has to criticise him. But I do not think merely because somebody has criticised the then Home Minister, it becomes a valid criticism against him. Even there, I do not think, he has given any reason for it. He has just passed remarks—as usual made side—jibes with the people and waited for its consequences. I do not think, he has any particular...

DR. SUBRAMANIAM SWAMY: He has made right jibes or side jibes?

SHRI R. VENKATARAMAN: You have to choose.

Then, he said, the Government servants are indirectly helping. I have seen also the report. I have

checked also this morning in our briefing. Certainly, I will not reject anything which has been stated nor will I accept. Just as I said, I will not accept anything which is just printed. I will not also reject anything which is printed, just because it is printed or told by somebody else. If there is anything, I will certainly go into it and see there is no room for any complaint. It is possible that some people in the Government, some officers in the Government may have some sneaking sympathy for some people. I do not say, everybody in the Government has absolutely correct attitude to the thing. If it is so, I will look into it and I will certainly see whether there is any basis for this kind of allegations.

Then, the next point which he mentioned is, there is a grievance in Punjab—they are not getting adequate share in Defence forces. We are taking care of it. In order to provide adequate opportunities to other people, we have made a tentative rule that the recruitment should be done from all parts of India. But where an adequate number is not forthcoming, it really goes to those areas where qualified people are available. It is not a rigid rule saying that we must select only from these areas a certain number. We have made a provision in the rule under which various areas have been given certain representation and...

PROF. N. G. RANGA (Guntur): It is a wholesome rule.

SHRI R. VENKATARAMAN: If they are available, they will be taken; if they are not available, then other people are taken.

So far as the charges that the Government should not interfere in the Gurudwara elections, is concerned, I give the assurance that the Government will not interfere in the Gurudwara elections. It is not our policy to interfere in the Gurudwara elections.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY: What about the All India Gurudwara Act?

SHRI R. VENKATARAMAN: I have no information on this. I am only in-charge of the Ministry. (*Interruptions*). If you want, I will get that information. (*Interruptions*).

MR. DEPUTY SPEAKER: Mr. Mani Ram Bagri is very silent and listening very carefully.

(*Interruptions*)

DR. SUBRAMANIAM SWAMY: All India Gurudwara Act is a very important issue in Punjab.

SHRI R. VENKATARAMAN: If it is such an important thing, they will discuss it there. After all, our responsibility in this matter is secondary. The primary responsibility is that of the State. In the State, they will discuss. . .

DR. SUBRAMANIAM SWAMY: Now, the next point which the hon. Member said is, the recommendation of the Peace Delegation should be given due weight.

SHRI R. VENKATARAMAN: I can also assure the hon. Member, light is welcome from whichever quarter it comes. Wherever we get some advice, wherever we get some help, we will certainly take it and we will not discard it because it comes from somebody or from some source.

श्री मनीराम बागड़ी (अमृतसर को धार्मिक नगरी घोषित करने के लिए और शराब बीड़ी और मांस की बन्दी के बारे में जो वहां पर एजीटेशन चल रहा है कहा था इनके बारे में आप ने कुछ नहीं कहा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली) : शराब की बात नहीं कर रहे हैं।

SHRI R. VENKATARAMAN: That is one of the points which they have to discuss and come together. It is not a thing which can be said off-hand. Amritsar does not consist of Sikhs only. It consists of various communities. Some kind of a consensus has to be arrived at in that place. It is not that we are against it. But we cannot take a decision like that without consulting everybody.

श्री रूप चन्द पाल शैलानी (हाथरस) : माननीय उपाध्यक्ष जी, पंजाब में जो कुछ हो रहा है, वह चिन्ता का विषय है और मैं समझता हूं कि हर देशवासी को इस से चिन्तित होना चाहिए लेकिन वहाँ की घटनाओं को और वहां पर जो स्थिति पैदा हो रही है उस को इतना तूल देना, इतना बढ़ा चढ़ा कर कहना यह मैं समझता हूं कि न तो कोई देश-भक्त ही ऐसा कर सकता है और न वह व्यक्ति कर सकता है, जिस को देश की एकता और अखंडता में विश्वास है। चन्द तत्व ऐसे हैं जिन के वैस्टेड इन्ट्रेस्ट्स हैं, निहित स्वार्थ हैं और जिन में कुछ पालीटीकल पार्टीज के लोग भी हैं, कुछ साम्प्रदायिक तत्व हैं और कुछ ऐसे तत्व हैं जो विदेशों से धन पाते हैं और चन्द अखबार भी ऐसे हैं, जो कि पंजाब की घटनाओं को इतना तूल दे रहे हैं और बात का बतंगड़ बना रहे हैं जिस से लोग यह समझें कि पता नहीं क्या हो रहा है हालांकि हमारी सरकार ने और हमारी नेता प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने, पंजाब के लोगों से वहां की समस्याओं के संबंध में बातें की हैं और हमारी सरकार चाहती है, हमारी प्रधान मंत्री जी चाहती हैं कि पंजाब की समस्या का कोई सौहार्द-पूर्ण हल निकल आए और वहां पर इस तरह की घटनाएं घटित न हों।

मान्यवर इस से पहले कि मैं अपनी बात प्रारम्भ करूं, मैं यह कहना चाहता हूं कि यह सारा संसार जानता है, देश का बच्चा-बच्चा जानता है कि पंजाब के लोग बहादुर लोग हैं और पंजाब के लोगों ने देश की रक्षा के लिए, विदेशी ताकतों से लड़ने के लिए और पंजाब को खुशहाल बनाने के लिए और पंजाब को ही नहीं बल्कि पूरे देश को खुशहाल बनाने के लिए जो जी-तोड़ मेहनत की है और अपनी बहादुरी दिखाई है, वह सोने के अक्षरों में लिखी जाती रहेगी। मेरा आप से निवेदन है कि वहां पर वातावरण को दूषित करने के लिए वहां के एटमोस्फेयर को खराब करने के लिए कुछ लोग जिम्मेदार हैं और वे इस तरह के कार्य करते हैं जैसे पवित्र स्थानों पर चाहे गुरुद्वारे हों चाहे मन्दिर हों, कहीं पर गाय का सिर फेंक दिया, कहीं पर गाय का मांस फेंक दिया, कहीं पर गाय की टांग फेंक दी और कहीं पर गुरुद्वारे के सामने बीड़ी और सिगरेट फेंक दी। ये इस तरह के लोग हैं जिन को पंजाब की एकता और देश की अखंडता में कोई विश्वास नहीं है और वे हमेशा साम्प्रदायिकता का वातावरण पैदा कर के अपने निहित स्वार्थों को सिद्ध करने की चेष्टा करते रहे हैं और आज भी उन का इरादा यही है लेकिन मैं आप के माध्यम

से उन को बता देना चाहता हूं कि सरकार सतर्क है और सरकार कोई भी कमी नहीं छोड़ेगी। ऐसा काम करने वालों, इस तरह के गैर-कानूनी तत्वों, साम्प्रदायिक तत्वों को दबाने के लिए सरकार पूरी तरह सतर्क है, सजग है और उनका सिर कुचलने के लिए सरकार के पास हर तरह का बन्दोबस्त है। मान्यवर, मैं चन्द सवाल आप के माध्यम से मंत्री जी से पूछना चाहता हूं।

MR. DEPUTY SPEAKER: Sufficient background has been given by Mr. Bagri. You can now put your questions. The Minister has replied to almost all the points.

श्री चन्द्र पाल शैलनी: यह बड़ा गंभीर मामला है। पंजाब में ही नहीं बल्कि पुरे देश में इस तरह के तत्व सिर उठा रहे हैं, जिस से देश की एकता, अखंडता खतरे में पड़ गई है। कहीं पर खालिस्तान की मांग है, कहीं पर अछूतिस्तान की मांग है, कहीं मिजोरम अलग होना चाहता है कहीं नागालैंड अलग होना चाहता है और कहीं असम की समस्या है। इस तरह से बहुत सी समस्याएं हमारे सामने हैं। मैं यह जानना चाहता हूं कि इस तरह की ताकतें जो मुल्क में पनप रही हैं, अलगाववादी, पृथकतावादी ताकतें जो पनप रहीं हैं, इन ताकतों से निबटने के लिए सरकार कोई कठोर कदम उठाने जा रही है?

अब इनके संबंध में कुछ मेरे सवाल हैं जिनका पूछ कर मैं अपनी बात खत्म करना चाहूंगा —

. पंजाब में उग्रवादियों एवं साम्प्रदायवादियों की गैरकानूनी एवं देश विरोधी हरकतों को स्टाम्प आउट करने के लिए सरकार क्या स्पेसिफिक मेजर्स अडोप्ट करने जा रही है?

जिस तरह दल खालसा और नेशनल काउंसिल फार खालिस्तान पर प्रतिबंध लगा दिया गया है और उनकी एक्टीविटीज को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया है उसी तरह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसी घोर साम्प्रदायिक एवं प्रतिक्रियावादी संस्था को भी बेन करने का क्या सरकार का विचार है?

पंजाब में उग्रवादी गतिविधियों में जो लोग संलग्न हैं उनको किन-किन देशों से मदद मिलती है? क्या यह सही है कि पड़ौसी देश पाकिस्तान खालिस्तान के समर्थकों को हथियार सप्लाई करता है और उन्हें अपने यहां शरण देकर हमारे देश की एकता एवं अखंडता को तोड़ने की कुचेष्टा कर रहा है?

पंजाब के मुख्य मंत्री सरदार दरबारा सिंह के पैतृक निवास स्थान पर जिन लोगों ने बम फैंके उन में अब तक कितने गिरफ्तार किए जा चुके हैं? यह बहुत ही गम्भीर मामला है। यदि इसके अपराधियों को सरकार पकड़ने में असफल रही है तो इसके क्या कारण हैं?

क्या यह बात सरकार की जानकारी में है कि कुछ पड़ौसी और कुछ पश्चिमी देश भारत को परेशान करने की नीति पर चल रहे हैं? इस नीति के अनुरूप वे भारत के सीमा क्षेत्र में आबाद सिख सम्प्रदाय को अधिक से अधिक भड़का रहे हैं। वास्तव में ये शक्तियां प्रत्येक उस तत्व को उभार रही हैं जो भारत की केन्द्रीय सरकार से टकरा सकता है। इन उग्रवादियों को कितनी आर्थिक एवं अन्य प्रकार की सहायता विदेशी तत्वों से मिल रही है?

पंजाब की इन समस्याओं का सौहार्दपूर्ण हल निकालने के लिए सरकार क्या

[श्री चन्द्र पाल शैलानि]

क्या प्रभाव और ठोस कदम उठाने जा रही है?

मुझे आशा है कि माननीय गृह मंत्री जी मेरे इन सवालों का जवाब दे कर इस सदन के माध्यम से इस देश की जनता और इस देश को अवगत करायेंगे कि इस असामाजिक गैर-कानूनी तत्वों से निबटने के लिए सरकार क्या ठोस उपाय कर रही है।

SHRI R. VENKATARAMAN: I thank the Hon. Member for drawing the attention of the House to the statement made by the Prime Minister.

In fact, recently in the Rajya Sabha also, the Prime Minister said that she is ready to have discussions with the leaders of the Akali Dal and to keep the doors open for negotiations.

With regard to the recent defiling of places of worship this is being done on both sides. The Gurudwaras are also being defiled. The Hindu temples are being defiled. As I mentioned in my earlier statement, this is an act, not of any Punjabi local citizens, but of some agent provocateurs who are interested in bringing about a communal clash and creating communal tensions. They are all anti-social elements and I am going to give some figures about what we are going to do about them.

With regard to the suppression, we have banned the Khalistan movement and action taken is this.

61 Dal Khalsa activists have been arrested and cases have been registered against them.

9 of the followers of Bhindrewala have been arrested.

We have arrested nearly 500 anti-social people whom we suspect are doing this.

We have taken every action in respect of this matter.

I am asked the question whether RSS will be banned. I do not think it arises out of this because it is nowhere said that any of these cases are due to RSS. It is really some extremists in the Dal Khalsa Movement who are creating this problem. It is not reported that others have come into the picture.

To the last question whether they are getting any assistance from Pakistan or Western nations, I do not have information in this regard and I shall be very glad to get information on this aspect.

MR. DEPUTY SPEAKER: Shri Ram Vilas Paswan.

Mr. Paswan is going to take the shortest time in his life.

AN HON. MEMBER: Shortest time in his life time.

MR. DEPUTY SPEAKER: Mr. Paswan is going to create a record.

13.00 hrs.

श्री रामविलास पासवान (हाजीपुर): उपाध्यक्ष महोदय, आज के हिन्दुस्तान टाइम्स में एक खबर निकली है--

'Chauhan burns flag, arrested'

यदि इसको पढ़ने का कष्ट किया जाए तो इसमें 2-3 बातें जो उन्होंने पुलिस के समक्ष कही हैं अरेस्ट होने के बाद, उन्होंने 2-3 चार्ज लगाए हैं। पहली चीज उनसे पूछी गई कि आपको फण्ड कहां से मिलता है तो उन्होंने बताया कि—

"Asked pointedly where funds for the Khalistan movement were coming from, he stated categorically and without hesitation that no Government or foreign institution was directly or indirectly providing funds. These, he said, came only from Sikh groups and gurudwaras."

दूसरी चीज उन्होंने कही है कि—

"Dr. Chauhan said two countries had agreed to sponsor 'Khalistan' representative for observer status at the UN, and had agreed to recognise the 'Khalistan' passport. He did not name the two countries but stated that they were neither with the USSR and its satellites nor of the West. He declared his distrust of the Moscow regime."

आगे उन्होंने कहा कि दो देश हैं, जिन्होंने उनको मान्यता प्रदान कर दी है, जिनका नाम बताने से उन्होंने इन्कार कर दिया है ।

मैं समझता हूं कि भारत के गृह मंत्री को जरूर पता होगा कि वे दोनों देश कौन से हैं ।

तीसरी चीज उन्होंने श्री जैल सिंह जी के सम्बन्ध में कही है और बड़ी खुशी जाहिर की है कि—

"Commenting on the election of Mr. Jail Singh, Dr. Chauhan expressed his pleasure at the fact that the seventh President of India was a Sikh."

और एक एलीगेशन उन्होंने लगाया है—

"He charged the police in the Punjab with cruel repression and said dozens of young men had simply vanished—probably tortured and killed. Hundreds, he said, were detained in various jails under the National Security Act."

तो इससे दो-तीन सवाल निकलते हैं । पहली बात तो यह है कि यह देश धर्म-निर्पेक्ष है । इसमें जितने भी धर्म, संप्रदाय के लोग हैं, सब लोगों को समान अधिकार मिलें, समान अवसर मिलें और न सिर्फ समान अवसर मिलें, न सिर्फ उनकी सुरक्षा की जाए, बल्कि उनके दिल-दिमाग में भी यह बात बैठे कि हम सुरक्षित हैं । सिर्फ सुरक्षा प्रदान करना ही फर्ज नहीं है कि इतने हथियार दिए हैं, इतनी पुलिस भेज दी है, इतने होमगार्ड और सी आर पी भेज दी है, बल्कि सरकार का यह भी कर्त्तव्य है कि जहां अल्पसंख्यक हैं, कमजोर लोग हैं, उनके दिमाग में भी यह बात बैठाई जाए कि वे देश के नागरिक हैं और पूरी तरह से सुरक्षित हैं । यह भावना उनके मन में बैठाना सरकार का काम है ।

जहां तक सिक्खों का सवाल है, उन्होंने देश के लिए क्या-क्या किया, यह सब को पता है, इसकी पृष्ठभूमि में मैं नहीं जाना चाहता । राष्ट्रीय आंदोलन में उनका कितना योगदान है, हिन्दुस्तान के विभाजन के समय उनका क्या रोल रहा , मास्टर तारा सिंह का क्या रोल रहा, इस बात को सभी जानते हैं । इसके साथ-साथ यह बात भी महत्वपूर्ण है कि यदि देश का कोई भाग हमसे अलग होने की बात सोचता है भले ही वे कुल संख्या का दो प्रतिशत क्यों न हों, लेकिन फिर भी यदि वह अलग होने की बात सोचता है या इस तरह का कीड़ा उसके दिमाग में पाला जाता है तो यह हम सब लोगों के लिए दुखद स्थिति है ।

सब से बड़ी बात तो यह है कि उसके दिमाग में यह बात क्यों आ जाती है । मंत्री महोदय ने राज्य सभा में कहा कि इसमें सिक्ख थोड़े हैं । सिक्ख थोड़े हो सकते हैं । किसी भी आंदोलन को चलाने वालों की संख्या पहले थोड़ी ही होती है, लेकिन नारा इतना लुभावना होता है कि, उसमें इतना दम रहता है कि अनजान लोग उसमें स्वत: आकर्षित हो जाते हैं । हिन्दुस्तान-पाकिस्तान बंटवारे के समय भी जिन मुसलमानों ने उसमें भाग लिया, खून बहाया, मैं समझता हूं कि अधिकतर हिन्दुस्तान में ही हैं । कोई अपना घर-बार छोड़ कर जाना नहीं चाहता । बटवारा हुआ, लेकिन उसमें हिस्सा लेने वाले किसी कारणवश नहीं जा सके लेकिन बटवारा तो हो गया । हजारों की संख्या में लोग मरे, लोगों ने एक-दूसरे को मारा । इसलिए यह नारा अभी भले ही देखने में हल्का लगता हो, खालिस्तान का नारा

[श्री राम विलास पासवान]

आज भले ही हल्का लगता हो और इसके पीछे कुछ ही लोगों का हाथ हो लेकिन इस नारे के पीछे जो लोगों की भावना है, जो भावना इसमें सन्निहित है उससे यह आगे चल कर बड़ा रूप भी धारण कर सकता है। इसलिए, यह साधारण सा मामला नहीं है और इसको आसानी से आपको नहीं लेना चाहिए। मैं तो यह समझता हूं कि इसका सीधा सम्बन्ध जा कर जुड़ता है कानून और व्यवस्था से। हम देखते हैं कि जितनी भी समस्यायें हैं सब की जड़ में ला एंड आर्डर की प्राब्लम होती है। जब से यह सरकार बनी है प्रत्येक राज्य में कानून व्यवस्था की स्थिति बिगड़ती चली जा रही है। क्या इसके पीछे आन्तरिक कलह तो नहीं है और उसके कारण तो यह बिगड़ती नहीं चली जा रही है। मैं चाहता हूं कि साफ बताया जाए कि कांग्रेस आई के लोग भी उस में क्या सम्मिलित तो नहीं है, आन्दोलन के पीछे सत्ताधारी पार्टी का भी हाथ तो नहीं है ? प्रत्येक राज्य में कानून और व्यवस्था की स्थिति जो बिगड़ती चली जा रही है उसके पीछे कांग्रेस पार्टी का आन्तरिक झगड़ा भी तो काम नहीं कर रहा है। दरबारा सिंह जी के मकान पर बम्ब फैंका गया, सिर्फ इतना सा ही यह मामला नहीं है। इसके पहले लाला जगत नारायण की हत्या की गई जिस के सम्बन्ध में संसद् में बहस भी हुई थी और शोक प्रस्ताव भी पारित किया गया था। उसका क्या नतीजा हुआ ? निरंकारी बाबा की हत्या हुई, उसका क्या नतीजा निकला ? एक कड़ी के साथ दूसरी लड़ी जुड़ती चली गई है। सारा मामला कानून और व्यवस्था का है। मैं जानना चाहता हूं कि क्या राज्यपाल ने पंजाब की बिगड़ती हुई कानून और व्यवस्था की स्थिति के सम्बन्ध में आपके पास कोई रिपोर्ट भेजी है और कहा है कि स्थिति बिगड़ती चली जा रही है ?

यह ठीक है कि अल्पसंख्यक समुदाय के मन में सुरक्षा की भावना पैदा की जानी चाहिए। सबसे अधिक दुःख तब होता है जब कोई आदमी क्राइम करता है तो क्राइम करने के बाद वह गुरुद्वारे, मंदिर और मस्जिद में घुस जाता है, कुवैत एम्बेसी में चला जाता है, हत्या की, चला गया और उसके बाद कह दिया जाता है कि हम लाचार हैं। आपने अपने वक्तव्य में धर्म निरपेक्षता, सहनशीलता, मैत्री आदि की दुहाई दी है और अपनी आस्था प्रकट की है। संसद ने सवसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया था। क्या उस प्रस्ताव के पारित होने से समस्या का निदान हो गया है या हो जाता है ? उस प्रस्ताव के अनुरूप भारत सरकार ने अभी तक क्या कार्यवाई की है, भारत के गृह मंत्री ने या भारत की प्रधान मंत्री ने जिन्होंने सदन में प्रस्ताव रखा था, अभी तक क्या पहल की है ? क्या कोशिश नहीं की जा सकती कि कोई कनक्रीट चीज निकले ? क्या बैठ कर बातचीत आप नहीं करेंगे ? यह ठीक है कि उनकी कुछ समस्यायें हैं, सामाजिक मामले हैं, धार्मिक मामले हैं। अब उनके क्या ग्रीवेंसिस हैं, नौकरी के ग्रीवेंसिस हैं, इसका आपने पता लगाने की कोशिश की है। और पता लगाने की कोशिश की है कि जो खुराफात हो रही है, जो आन्दोलन चल रहा है इसके पीछे कारण क्या है ? उन्होंने क्या कोई ग्रीवेंसिस सरकार के सामने रखे हैं ? कोई पागल आदमी ही हाथ में बम्ब भाला ले कर हमला करना शुरू कर सकता है। लेकिन यहां तो ऐसी बात नहीं है। उन्होंने क्या कोई रिप्रेजेंटेशन क्या कोई पत्र आपको दिया है कि ये हमारी मांगें हैं, हमारे साथ यह इंजस्टिस हो रहा है और यदि दिया है तो आपने उस पर क्या कार्यवाई की है ?

सब से दुखद स्थिति यह है कि जब कभी कोई साम्प्रदायिक दंगा होता है और उसमें अगर कोई हिन्दू मारा जाता है तो हिन्दू तो दुखी होते हैं लेकिन

मुसलमान खुश होते हैं और अगर मुसलमान मारा जाता है तो मुसलमान तो दुखी होते हैं और हिन्दू खुश होते हैं और सिख मारा जाता है तो सिख तो दुखी होते हैं लेकिन हिन्दू खुश होते हैं । मौलाना आजाद ने कहा था कि देश में तब तक राष्ट्रीयता नहीं पनप सकती है जब तक कि चाहे हिन्दू मरे या मुसलमान सभी दुखी नहीं होंगे, जब तक हिन्दू मरे तो मुसलमानों को दुख न हो और मुसलमान मरें तो हिन्दुओं को दुख न हो, एक समुदाय के व्यक्ति के मरने पर दूसरे समुदाय के लोगों के दिल पर चोट न लगे । इस तरह की राष्ट्रीय धारा हमारे देश में बहनी चाहिए । ग्रुपिज्म और फ्रेक्शनलिज्म बढ़ती जा रही है । एक समुदाय का आदमी मरता है तो दूसरे समुदाय के लोगों को खुशी होती है । इसलिए मैं चाहता हूं कि जो हिन्दू और सिख का मामला है, खालिस्तान का मामला है, जिसका कुछ लोगों के हाथ में सूत्रधार है और देश के बाहर दूसरी जगह बैठकर करते हैं, सरकार जहां कानक्रीट कदम उठाये उसको चैक करने के लिए, वहीं सरकार एसा वातावरण तैयार करे जिसमें यदि कोई हिन्दू पर हमला होता है तो सिख समुदाय उसकी निन्दा करे । यदि सिख पर हमला होता है तो दूसरे सम्प्रदाय के लोग उसकी भर्त्सना करें । जब तक ऐसी फ़िजा नहीं बनेगी तब तक समस्या का निदान नहीं होगा ।

इमरजेंसी के समय जिसको जेल भेजा गया तो छूटने पर वह नेता बनता था, तो या तो इस समस्या का कानक्रीट निदान कीजिए, नहीं तो यदि आप किसी को जेल भेज देंगे तो आपके लिए तो ठीक होगा, लेकिन कहीं यह न हो कि जितके दिमाग में वह बात चुभती है वह जेल से माला पहन कर निकले । इसलिए इस समस्या का हल सोचिये, प्रधान मंत्री को स्वय पहल करनी चाहिए क्योंकि वह सदन की नेता हैं । उन्होंने सदन में आ कर प्रस्ताव पढ़ा था, प्रधान मत्री को इसमें पहल करनी चाहिये, और जो वहां विभिन्न विचारधारा के लोग हैं उनसे बातचीत करनी चाहिये । और कोई रास्ता निकालना चाहिये । उनकी क्या शिकायत है उसको भी दूर करना चाहिए । और आप यह भी बतायें कि आपके दल का जो आन्तरिक मामला है वहां पंजाब में उसका इस आन्दोलन के प्रति क्या रुख है ?

SHRI R. VENKATARAMAN: Sir, my friend, Shri Paswan is eloquent. He is always eloquent and very passionate in his presentation of the problems of the people.

He quoted from the *Hindustan Times* which I have also seen. They said that no money has come from outside. I am not prepared to accept this also. As I said, we have no information that money is coming from outside, we have also no information that money is not coming from outside. Therefore, we have to investigate both. I cannot accept the statement in which they say that money is not coming from outside. This has got to be verified. We are at it.

Then he also mentioned about two countries which agree to recognise and sponsor Khalistan. I do not think it is possible at all because there is no State, nothing. But, whatever it is, I fail to see how they will ever be able to know anything except probably to say that they recognise. We do not think that there is any country either in a group or in the non-aligned who would be so disposed towards recognising this splinter group.

Then he also referred to Gianiji's election. Here we are all happy including the Sikhs in Punjab. Next he mentioned about the charge that some people have been tortured. This is a thing which is generally made with-

[Shri R. Venkataraman]

out some specific instances being quoted. It is not capable of verification.

Shri Paswan Ji made more important and very valid points. Firstly, he said that it is regrettable that the people should think of asking for separation. The fact that some people at least want this kind of separation shows that there is some grievance of the kind. I do not subscribe to that theory. There are always some people, some disgruntled elements or, there may be a very small infinitesimal minority who will not be satisfied with the rest who can always create this kind of trouble. It is the duty of the majority to see that the other people who create the troubles or problems of this kind are either educated or taught a lesson which they have to. Then he wanted me not to take it lightly. Sir, even at the opening answer to Bagriji I said firmly that Government will suppress the Dal Khalsa movement. The only thing is that I do not have your passion and eloquence to put the way in which you want.

Sir, he also asked me whether any Congress (I) persons are there in the movement for the Khalistan. I want to emphatically deny that. It is not the policy of the Congress Organisation to promote any kind of fissiparous tendency in any part of India.

MR. DEPUTY SPEAKER: It should be the policy of every political party including the party to which Shri Paswan belongs.

SHRI R. VENKATARAMAN: Sir, then he asked me whether any report has been received. We are getting reports from time to time of the various activities that take place in Punjab and the measures that are being taken. We are in constant touch and we give such advice as we can.

SHRI RAM VILAS PASWAN: Has Governor sent any report?

SHRI R. VENKATARAMAN: Governors do send the reports to the President the copies of which come to us.

Sir, as regards the concrete steps, the Prime Minister has made this offer. She said that she was ready and willing to discuss with the Akali people. Now, it is upto them to say 'yes' and take advantage of the offer made by the Prime Minister. If they do not do it what can we do. You cannot blame the Prime Minister saying that she has not taken action. She has said positively that she is ready to discuss these matters with the Akali Dal people. It is upto them to come and discuss these matters.

Sir, then Mr. Paswan said that whoever is sent to jail becomes a leader but that is how we became leaders. Let us stop hereafter. Those were days when we fought for freedom and liberation from the British. We cannot carry this heritage after Independence when we only suppress crime and things which are anti-social. I do not think it should be carried any further.

SHRI HARIKESH BAHADUR (Gorakhpur): Mr. Deputy Speaker, Sir, I will only ask a few questions. I am not going to deliver any long speech because the background has already been covered. But I must say that some anti-social elements in Punjab have been becoming very active for the last few months. This is a very dangerous sign so far as unity and integrity of the nation is concerned and everyday we are having reports of this activity not only from within the country but from outside the country as well.

Sir, though I have got high regard for Shri R. Venkataraman I must say that the Government has been proved a total failure in arresting and controlling the present situation. These anti-social and anti-national elements are day-by-day becoming active everywhere. Even they are going to the extent of burning Indian Constitution and the National Flag. The British Police has said that they had been trying to set on fire the Indian Nation-

al Flag and the Constitution and then crush them under their feet. This is the feeling of those who are operating outside this country for Khalistan. They are having this kind of feeling about this country. They are telling that this country is anti-democratic. They have uttered many things. These things have already been published. I do not know whether they have Indian citizenship or not. Sir, bombs had been thrown at the residence of the Chief Minister. Now, you can understand what will be the condition of the ordinary people there. They will be feeling insecure. There is completely a sense of insecurity throughout Punjab at the moment. Everybody has got high respect for Sikh people. At the same time for other communities also in this country. We want that the problems must be tackled properly. But, Sir, if any body is just talking of separatism, trying to divide this country, trying to sabotage the integrity and unity of this nation, certainly it cannot be tolerated and it should not be tolerated. About those who had thrown bombs at the residence of the Chief Minister and those who have been killing the innocent people, Police say that they belong to Bhindranwala Group. It is difficult to understand their inability to arrest such elements who are taking shelter in the name of religion, here and there, sometimes entering into Gurdwaras, sometimes some other sacred places. They are entering into those places and they are trying to save themselves. But the Government could not detain them and arrest them. If necessary, the Government should talk to the religious leaders also and they should, through negotiations, solve this problem because anti-social elements should not be spared. Mr. Raj Mohan Gandhi, Dr. Susheela Nayyar and Shri S. M. Joshi went to Punjab to study the situation. They said that the situation was very explosive. Punjab is a border State. Everyone knows this. If such an explosive situation continues in Punjab, if it is not properly controlled, then it will be dangerous for the Communal tension is also increasing in Punjab. There had been no communal tension earlier. But since this Khalistan issue was raised by some people, the communal tension also increased because some people just want to create some dissensions between the two communities, between the Hindus and the Sikhs. If they play this kind of trick, they think that they can ultimately succeed. They are trying their level best to create trouble. Sir, it is also said that foreign money is coming to help these anti-social elements. If it is true, it is a very dangerous thing. The hon. Minister has also said that he cannot accept that the foreign money is not coming. Then the Government should try to find out which are the countries who are trying to finance them for this type of agitation.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The hon. Minister said for both, coming or not coming.

SHRI HARIKESH BAHADUR: Government must be vigilant in this respect. The people are feeling that foreign money is coming. Without foreign money, without heavy financial help, they cannot go to such an extent. The Chief Minister said about the involvement of Police Superintendent. He said that he was involved in instigating and encouraging some anti-social elements. He also said that the person has been transferred. But it is not a punishment. If there is anything of this kind, it should be properly enquired into and Government should try to know whether the person is actually involved or not. If the person is involved in such a kind of activity, serious action should be taken against that person. He is playing with the integrity of the nation. He is trying to aid those forces which are trying to divide this nation. This person must be charged as guilty and should be punished. He should be removed from the service. There must be a thorough enquiry into this matter. Some of the Khalistan supporters are operating from some foreign bases, like Canada, Britain and the United States of America. These are the friendly countries. But anti-India

[Shri Harikesh Bahadur]

operation is going on in these countries. Therefore, I would like to ask a very specific question in this regard. I would like to know whether the Government of India will ask the Governments of Britain, the U.S.A. and Canada to check anti-India activities by Khalistan supporters on the land of those countries.

I would also like to know whether these people involved in anti-India activities are having citizenship of India. If so, will the Government take steps to abolish their citizenship? Persons who have burnt the national flag should not be treated as citizens of this country. If they are citizens of this country, their citizenship must be abolished and their passport should be cancelled and impounded.

The Chief Minister of Punjab has talked of foreign hand. What steps are being taken to identify these foreign hands?

Lastly, was any offer given for negotiations to those who are talking of Khalistan movement? Had any offer been made for negotiations to the so-called President of Khalistan, Shri Jagjit Singh? Do the Government want to talk to them on this question?

SHRI R. VENKATARAMAN: I agree with the hon. Member that the situation is rather difficult; I would not say, it is explosive, it is difficult. I must also say that it is not so bad as to say that there is a complete sense of insecurity; it is not so. It is bad, but let us not exaggerate, and make it appear as if the situation is causing such a lot of concern.

The hon. Member wanted to know whether the person who attempted to burn the national flag in London was citizen of India or not. I have already in the morning asked them to find out whether he holds an Indian passport, or U.K. passport. We will try to get the information. But preliminary enquiries show that his Indian passport has been impounded; we have cancelled it, though it has not been caught. I also understand that a case has been filed against it by his wife or somebody on his behalf against such a cancellation of the passport. We will pursue this matter and will certainly give no quarter to this man. This man is not—I repeat, not—entitled to any kind of assistance from India. In fact, he has forfeited his right to citizenship by burning the Indian flag.

The second point which the hon. Member raised was about the foreign money. I have already told about that. We cannot say anything, because we are always looking into this matter, and wherever we suspect money is coming. In fact, the investigations would be prejudiced then. Therefore, we are always looking into this matter. We will try to see whether foreign money comes and if so, from what sources and so on.

Then, the hon. Member said that serious action should be taken against the Government servant and mere transfer was not enough. Subject to the general rule that the process of natural justice should be followed, namely that an opportunity should be given to the person concerned, we will certainly be very strict. But we cannot merely for the sake of being strict deny the usual rights of defence and all that, his case being heard and so on.

The last question that the hon. Member asked was whether we would be prepared to negotiate on the question of Khalistan. My answer is emphatically 'No'.

SHRI HARIKESH BAHADUR: I had also asked whether the Government of India will ask the Government of Britain, Canada and USA that these people should not be given any opportunity to propagate against India.

SHRI R. VENKATARAMAN: I do not have any information about this; the Ministry of External Affairs may have some information. I will pass it on.

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा गला खराब है, मैं थोड़ी सी बातें ही कहना चाहूंगा। पंजाब की स्थिति सचमुच में गम्भीर है और इस गम्भीर स्थिति के पीछे दल खालसा और राष्ट्रीय खालिस्तान परिषद् इन दोनों का हाथ है। यह खतरा हमारे मुल्क में तभी से पैदा हो गया जब से पाकिस्तान को अमरीकी साम्राज्यवादी और चीन की सरकार हथियार-बन्द कर रही हैं। इस पृष्ठ भूमि में इस तरह के खतरे का उपस्थित होना हमारे देश के लिए सचमुच में बहुत ही गम्भीर बात है। ये खालिस्तान की मांग करने वाले जगतसिंह चौहान और मन मोहन सिंह जो आन्दोलन चला रहे हैं इसको उग्रवादियों या अतिवादियों का आन्दोलन कहा जाता है। इसके पीछे निश्चित रूप से साम्राज्यवादी मुल्कों का हाथ है। सरकार को इसका पता अभी तक नहीं चला, यह आश्चर्य की बात है। सरकार करती क्या है? उसे इस बात का पता लगाना चाहिए कि कौन सी विदेशी ताकत इस आन्दोलन के पीछे है और कौन कितना पैसा दे रहा है? अभी सरकार को इसका पता नहीं है लेकिन अगर सरकार गम्भीरता के साथ कोशिश करेगी तो पता चलेगा।

दूसरी ओर भिंडरावाले के नेतृत्व में हमारे देश में हत्याओं का बाजार गरम है, गोलीकाण्ड हो रहे हैं। धार्मिक कट्टरता और असहिष्णुता के नाम पर साम्प्रदायिक दरार पैदा की जा रही है। ये लोग साम्प्रदायिक जहर पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं तो इनके खिलाफ़ इनके प्रचार के खिलाफ़ सरकार क्या कार्यवाही कर रही है? फिर जो वहां पर अकाली दल है, मैं जानना चाहूंगा कि अकाली दल के कितने ग्रुप्स हैं, उनकी नीति क्या है और क्या उन्होंने साफ-साफ खालिस्तान के नारे का विरोध किया है या अन्दर ही अन्दर समर्थन कर रहे हैं? इस बात की जानकारी इस देश के अवाम को होनी चाहिए। फिर खालिस्तान की ओर से पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच एक बफर स्टेट बनाने का नारा दिया गया है और सिक्खों के जजबात को उभार कर उनको अपने पीछे लाने की कोशिश की जा रही है। इसलिए मैंने पूछा है कि अकाली दल के लोगों का क्या रुख है, इस आन्दोलन के बारे में?

ठीक उसी तरीके से दूसरी तरफ़ हिन्दुओं को भी संगठित करने की कोशिश की जा रही है और जैसा कि हरिकेश जी ने बताया कि साम्प्रदायिक तनाव पैदा करने की कोशिश हो रही है। मैं जानना चाहूंगा कि हिन्दुओं के बीच में साम्प्रदायिक तनाव फैलाने के लिए आर० एस० एस० और जनता पार्टी के लोग किसी प्रकार से कोई कार्यवाही कर रहे हैं या नहीं? आर० एस० एस० और भारतीय जनता पार्टी का रोल इस मूवमेंट में क्या है?

ठीक इसी तरीके से क्या यह बात सच है कि भूतपूर्व गृह मंत्री और पंजाब के मुख्य मंत्री के बीच में कोई तनाव है और इसका फायदा खालिस्तान समर्थक तत्वों को मिल रहा है? फिर क्या सरकार ने सिक्खों की तर्कसंगत और जायज मांगों को पूरा करने की गारन्टी ली है ताकि किसी प्रकार से उनके धार्मिक मामलों में कोई गड़बड़ी न पैदा हो? इसके अतिरिक्त राज्य के लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए क्या सरकार इस बात का विचार रखती है कि पंजाब के धर्मनिरपेक्ष दल तथा जनतंत्र में विश्वास रखने वाले तमाम लोगों की एक मीटिंग बुलाई जाए? उस में विचार

[श्री रामावतार शास्त्री]

करके खालिस्तानियों को मुकाबला करने की कोई योजना बनाई जाए—क्या सरकार इस तरह का कोई विचार रखती है ?

उपाध्यक्ष महोदय, आखिरी सवाल मैं यह पुछना चाहता हूं कि अखबारों में जैसी कि खबर निकली है कि खालिस्तान के नेताओं का संबंध अमरीका के राष्ट्रपति से है और यदि खबर में निकला था कि श्री रैगन ने खालिस्तान के नेताओं को दावत पर आमंत्रित किया था और वे दावत पर गए भी—मैं यह जानना चाहता हूं कि इसके बारे में सरकार को पता है या नहीं ? अगर पता है, तो अमरीका की सरकार के पास विरोध पत्र कोई भेजा गया है या नहीं ? अगर भेजा गया है तो उस विरोध पत्र का ब्यौरा क्या है ?

SHRI R. VENKATARAMAN: I am thankful to Mr. Shastri's throat.

MR. DEPUTY SPEAKER: I have already thanked him.

SHRI R. VENKATARAMAN: As far as the proposition that imperialist countries are interested in this kind of activity, is concerned, there have been several theories floated with regard to this; and the Government cannot make any statement. We will take the information as it comes to us; and we examine this and will find out whether, and how far it is sustained.

With regard to foreign money, I have alreay stated the attitude. We will certainly pursue this matter and find out. Shastri Ji asked me about the attitude of the other parties. All of them are here and why does he want me to say anything?

SHRI RAMAVATAR SHASTRI: What are they doing? What are their activities?

SHRI R. VENKATARAMAN: I can assure him on behalf of all the Opposition parties that they do not support Khalistan; and none of them has supported it.

SHRI RAMAVATAR SHASTRI: What is the Akali Dal doing?

SHRI R. VENKATARAMAN: Akali Dal has not openly supported Khalistan. They have got certain grievances; but they have not openly supported Khalistan to my knowledge and to our knowledge.

The hon. Member then wanted to say that it is because of the differences between the then Home Minister and the Chief Minister of Punjab that there was something. (*Interruptions*) I want to emphatically deny that there was any such difference. This myth has been going round and round; and I want to deny it.

PROF. MADHU DANDAVATE (Rajapur): Now it will not be there.

SHRI R. VENKATARAMAN: Now about the next point, viz. that democratic elements should be brought together. It is our endeavour to create an atmosphere in Punjab, as well as in the rest of the country in which all the democratic elements and progressive elements will be able to do so. This policy of separation and these fissiparous tendencies are a danger to the country. Therefore, it will be our endeavour to create the atmosphere which I mentioned earlier.

As regards Mr. Reagan's dinner, the hon. Member has more information than I have.

PROF. MADHU DANDAVATE: He knows the menu also.

SHRI R. VENKATARAMAN: Therefore, I do not want to say anything.

MR. DEPUTY SPEAKER: The House stands adjourned now, to meet again at 2.40 p.m.

13.40 hrs.

The Lok Sabha then adjourned, for lunch till Forty minutes past Fourteen of the Clock.

The Lok Sabha re-assembled after Lunch at forty-four minutes past Fourteen of the Clock.

[SHRI CHANDRAJIT YADAV *in the Chair*]

MATTERS UNDER RULE 377

(i) REPORTED DECISION TO DISCONNECT THE HOT-LINE TELEPHONE LINES LINKING DIFFERENT AIRPORTS.

SHRI K. LAKKAPPA (Tumkur): There have been distressing reports that aircraft safety has been in jeopardy in our country.

It has been reported that the Civil Aviation Department has recently decided to disconnect the hotline telephone lines which link the different airports in our country and also our airports with the airports in the neighbouring countries.

India is at present divided into four air space control regions, under Bombay, Delhi, Madras and Calcutta. With the hot line system, when an aircraft is ready to take off, say from Palam, (Delhi) to Santa Cruz, (Bombay), flight details are flashed from the former airport to the latter and clearance for the flight is obtained within minutes. Such a precaution is necessary to avoid collisions of aircraft flying in opposite directions. If two aircraft are to take off from different airports at almost one and the same time and are to cross each other, the heights at which they are to fly and avoid collisions are determined in advance through the exchange of hotline message and the crew of the aircraft adjust the flying heights of their planes suitably. The flashing of news in advance of an impending flight from the respective air control region to the region which the flight will enter is mandatory under the regulations of the International Civil Aviation Organisation.

Now the reported decision of the Civil Aviation Department to do away with the hotline linking different airports poses a serous threat to the safety of aircraft.

It would appear that these hotlines are provided by P. & T. Department and the Civil Aviation Department has to pay some lakhs of rupees to P. & T. Department for their maintenance.

In recent months, the hotlines provided to the airports were found to be out of order and the air traffic control found it difficult to exchange messages through those hotlines. The equipment used for those lines was obsolete and complaints made from time to time to the Civil Aviation Department did not improve matters.

It is reported that the Civil Aviation Department found it to be waste of money to keep such unserviceable hotlines and decided to do away with them. It is also reported that in future the air traffic controls would make use of the aeronautical fixed tele-communication network which is a Morse code system and which takes nearly an hour to transmit a message. In an hour's time the aircraft would leave one air control region and enter another risking itself and risking the lives of passengers.

Safety of aircraft and of passengers should always be the primary consideration of the Civil Aviation Department. The Government should pay immediate attention to this problem. The hotline telephone connections between airports should not be done away with and they should be maintanied properly with sound equipment. (*Interruptions*) This has to be immediately conveyed to the Ministry and action taken should also be reported to the House urgently, by tomorrow.

MR. CHAIRMAN: I think the Ministry take note of this urgent matter.

(ii) INSTITUTE OF ADVANCED STUDIES, SIMLA

SHRI ARJUN SETHI (Bhadrak): It is tragic that the prestigious Institute of Advanced Studies at Simla is in the doldrums. It has not awarded any fresh fellowship since 1978 and today where there are only two scholars at